6

समझ उर धर, कहत गुरुवर,....

(आदरणीय पण्डित कैलाशचन्द जैन कृत
जैन-सिद्धान्त प्रश्नोत्तरमाला के सातवें भाग से संकलित)

समझ उर धर, कहत गुरुवर, आत्म चिन्तन की घड़ी है।
भव उदधि तन अथिर नौका, बीच मँझधारा पड़ी है ॥ टेक ॥

आत्म से है पृथक् तन-धन, सोच रे मन कर रहा क्या ?
लखि अवस्था कर्मजड़ की, बोल उनसे डर रहा क्या ?
ज्ञान-दर्शन चेतना सम, और जग में कौन है रे ?
दे सके दुःख जो तुझे वह, शक्ति ऐसी कौन है रे ?
कर्म सुख-दुःख दे रहे हैं, मान्यता ऐसी करी है।
चेत-चेतन प्राप्त अवसर, आत्म चिन्तन की घड़ी है॥
समझ उर धर कहत गुरुवर, आत्म चिन्तन की घड़ी है।
जिस समय हो आत्मदृष्टि, कर्म थर-थर काँपते हैं।
भाव की एकाग्रता लखि, छोड़ खुद ही भागते हैं॥
ले समझ से काम या फिर, चतुर्गति ही में विचर ले।
मोक्ष अरु संसार क्या है, फैसला खुद ही समझ ले॥
दूर कर दुविधा हृदय से, फिर कहाँ धोखा धड़ी है।
चेत-चेतन प्राप्त अवसर, आत्म चिन्तन की घड़ी है॥
समझ उर धर कहत गुरुवर, आत्म चिन्तन की घड़ी है॥
कुन्दकुन्दाचार्य गुरुवर, यह सदा ही कहि रहे हैं।
समझना खुद ही पड़ेगा, भाव तेरे बहि रहे हैं॥

शुभक्रिया को धर्म माना, भव इसी से धर रहा है।
है न पर से भाव तेरा, भाव खुद ही कर रहा है॥
है निमित्त पर दृष्टि तेरी, बान ही ऐसी पड़ी है।
चेत-चेतन प्राप्त अवसर, आत्म चिन्तन की घड़ी है॥
समझ उर धर कहत गुरुवर, आत्म चिन्तन की घड़ी है॥
भाव की एकाग्रता रुचि, लीनता पुरुषार्थ कर ले।
मुक्ति बन्धन रूप क्या है, बस इसी का अर्थ कर ले॥
भिन्न हूँ पर से सदा मैं, इस मान्यता में लीन हो जा।
द्रव्य-गुण-पर्याय ध्रुवता, आत्म सुख चिर नींद सो जा॥
आत्म गुणधर लाल अनुपम, शुद्ध रत्नत्रय जड़ी है।
चेत-चेतन प्राप्त अवसर, आत्म चिन्तन की घड़ी है॥
समझ उर धर कहत गुरुवर, आत्म चिन्तन की घड़ी है॥